International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 941-944

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 941-944
www.allresearchjournal.com
Received: 25-06-2017
Accepted: 27-07-2017

अनिल कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
अनिल कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

निरस्त्रीकरण एवं विश्व शांति का गांधीय दृष्टिकोण

अनिल कुमार

सारांश
गांधी के लिए अस्त्र की बजाए आत्मबल अधिक प्रभावी व उपयोगी था। हथियारों की अंधी दौड़ जो भारत की स्वतंत्रता के समय भी चालू थी, गांधी के अनुसार अनावश्यक थी उसी अनुरूप उन्होनें नवस्वतंत्र भारत को इस दौड़ से बचने की सलाह दी। भारत को सम्पूर्ण विश्व के शांति दूत के रूप में देखने की गांधी की इच्छा थी। उनके अनुसार वास्तविक शक्ति आत्म बलिदान से आएगी ना कि शारीरिक बल से। निरस्त्रीकरण के पीछे मुख्यतः राष्ट्रों की शोषण करने की प्रवृति थी। गांधी ने सेना से युद्ध के कार्य से भिन्न रचनात्मक कार्य कराने का सुझाव दिया। औपनिवेशिक सम्राज्यवादी व शोषणकारी प्रवृति वैश्विक अशांति का मुख्य कारण थी, और सच्ची शांति अहिंसा के मार्ग पर चल कर ही प्राप्त हो सकती थी।

कूटशब्द : निरस्त्रीकरण, साम्राज्यवाद, विश्व संघ, शांति, गांधीय दृष्टिकोण, अहिंसा, सत्याग्रह, आतंक का संतुलन, व्यवहारिक आदर्शवादी

प्रस्तावनाः
निरस्त्रीकरण एवं विश्व शांति का मुद्दा गांधी के समय ही बहस का विषय बन चुका था। गांधी के अनुसार जब तक राष्ट्र शोषण का त्याग करके और अपनी ताकत पर निर्भरता की बजाए न्याय करना नहीं सीखते, तब तक पृथ्वी पर कभी शांति नहीं हो सकती थी। गांधी ने हथियारों, उनकी मात्रा और गुणवत्ता पर केवल प्रतिबंध लगाने की बात करने के बजाय, पूर्ण, सार्वभौमिक निरस्त्रीकरण के लिए गुहार लगाई।
उन्होंने नवजीवन में प्रकाशित किया, शांति के लिए विश्व निरस्त्रीकरण, उस आंतरिक मानसिक निरस्त्रीकरण का बाहरी और दृश्यमान संकेत भर होना चाहिए। इसी पर ही बाहरी शांति सुरक्षित हो सकती है। हालाँकि, जब तक एक व्यक्ति वास्तव में श्रेष्ठ सेना द्वारा दूसरे को अपने अधीन कर रहा है, तब तक यह माना जाएगा कि आंतरिक मानसिक निरस्त्रीकरण की दिशा में पहला कदम भी नहीं उठाया गया है।[1]
गांधी ने कहा, ''यूरोप को यह पहला कदम उठाना चाहिए, एक बार कदम उठाए जाने पर हथियारों के निर्माण में एक दूसरे से आगे निकलने की प्रवृत्ति कम हो जाएगी। उन्हानें संकेत दिया कि यदि भारत, अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, हथियारों की दौड़ में शामिल होगा तो यह उतना ही विनाशकारी होगाः ''भारत के लिए हथियारों की दौड़ में प्रवेश करना आत्महत्या के समान है। अहिंसा के लिए भारत की हार के साथ दुनिया की अंतिम आशा भी चली जाएगी। ... गांधी ने आशा व्यक्त की कि ''भारत अहिंसा को अपना पंथ बनायेगा, मनुष्य की गरिमा की रक्षा करेगा, और विश्व को उस स्थिति में जाने से रोकेगा जहाँ से उसने खुद को उठाया है।"[2]

गांधी एवं निरस्त्रीकरण
भारत के विभाजन और स्वतंत्रता के के समय हिंदुओं और मुसलमानों के बहाए गए रक्त ने निश्चित रूप से गांधी को बहुत परेशान किया, लेकिन जिस बात ने उन्हें और भी अधिक परेशान किया, वह यह था कि देश की सेना, शारीरिक बल के नाम पर शपथ ग्रहण कर रही थी। उन्होंने कहाः ब्रिटिश शासन की राजनीतिक दासता से आजादी आ गई है, लेकिन हमारा सैन्य खर्च बढ़ गया है और अभी भी बढ़ने का खतरा है और हमें इस पर गर्व है! हालाँकि ... मुझमें और कई अन्य लोगों में आशा है कि भारत इस मृत्यु नृत्य से बच जाएगा और नैतिक ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेगा।[3]
उन्होंने भारत की स्वतंत्रता पश्चात् भारी मात्रा में रक्षा बजट पर खर्च होने पर महसूस किया कि देश इस अनावश्यक और असमर्थनीय बोझ के नीचे कराह रहा था उन्होंनें कहा कि हम आश्वस्त हैं कि हमें उन हथियारों की आवश्यकता नहीं है जो भारत काम में ले रहा है।[4] वह बार–बार अपनी स्थिति पर अड़े रहे कि भारत की सैन्य क्षमता के आधार पर अपनी रक्षा रणनीति में संयुक्त राज्य अमेरिका

सहित पश्चिमी शक्तियों का अनुकरण या प्रतिद्वंद्वीता करने की इस कोशिश से ज्यादा विनाशकारी कुछ नहीं हो सकता है।

गांधी ने स्पष्ट रूप से इस बात की वकालत की कि भारत एशिया के साथ निरस्त्रीकरण के संबंध में नेतृत्व करे । 2 अप्रैल, 1947 को दिल्ली में एशियाई संबंध सम्मेलन के समापन सत्र में, उन्होंने घोषणा की कि पश्चिम, परमाणु बम निर्माण में वृद्धि से निराश है, क्योंकि परमाणु बम का अर्थ केवल पश्चिम का ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व का विनाश है, जैसा कि अगर बाइबिल की भविष्यवाणी पूरी होने जा रही है तो इस प्रकार एक पूर्ण जलप्रलय होना है। अब यह आप पर निर्भर है कि जो शिक्षा आपके शिक्षकों और मेरे शिक्षकों ने एशिया को सिखाई है, उसी अनुरूप आप दुनिया को उसकी दुष्टता और पाप के बारे में बताएं।[5]

हालांकि, गांधी निश्चित रूप से एक राष्ट्र के जबरन निरस्त्रीकरण के विरोध में थे । उदाहरण के लिए, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत के निरस्त्रीकरण का जिक्र करते हुए, गांधी ने जोरदार घोषणा की: "मैं हथियारों के कब्जे या उपयोग से घृणा करता हूं, लेकिन मैं जबरन हथियारबंदी के पक्ष में नहीं हूँ, जैसा कि मैंने तीन साल पहले कहा था, लोगों के इस जबरन निरस्त्रीकरण को इतिहास में भारत के खिलाफ ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए सबसे बड़े पाप में से एक माना जाएगा। अगर लोग हथियार रखना चाहते हैं, तो बिना किसी हिंसा के उन्हें रखा जा सकता है। मजबूरी की बजाए हमें जिम्मेदारी और आत्म–संयम के साथ हथियारों का इस्तेमाल करना सीखना चाहिए, भले ही उन्हें रखने का अधिकार हो।[6] उसी भावना से, उन्होंने एक दंडात्मक उपाय के रूप में पराजितों को निरस्त्र करने की निंदा की।

गांधी ने माना कि यदि महाशक्तियों ने स्वयं को निरस्त्र कर लिया, तो वे न केवल युद्ध के कहर से बच जाएंगे, बल्कि खुद को महिमामंडित कर लेंगे और दुनिया में पवित्रता बहाल कर देंगे, और भावी पीढ़ी की शाश्वत कृतज्ञता अर्जित करेंगे। साथ ही, इन शक्तियों को अपने जीवन के अपने तरीके को संशोधित करते हुए, अपने साम्राज्यवादी मंसूबों और कमजोरों और असहायों के शोषण को छोड़ना होगा। यह सब, निश्चित रूप से, व्यापक क्रांति के बराबर है, गांधी की राय में जिसका एकमात्र विकल्प, पूर्ण निरस्त्रीकरण था। महाशक्तियों से इस क्रांति की दिशा में आगे बढ़ने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी, जिस जीवन शैली के वे अब तक अभ्यस्त थे, निश्चित रूप उसके विपरीत अचानक या रातों–रात निरस्त्रीकरण पर काम नहीं किया जा सकता था, इसमें समय लगेगा।[7]

एक बात जो गांधी को पूरी तरह से पता थी, वह यह थी कि यह स्थिति केवल दुनिया के सभी राष्ट्रों द्वारा अहिंसा को अपनाने के माध्यम से ही आएगी। गांधी के अनुसार अहिंसा से, हथियारों की बुराइयों को ठीक किया जा सकता है, जो अंततः सभी राष्ट्रों के हथियार हैं। मैं, आखिरकार जानबूझकर यह कह रहा हूं, क्योंकि हमारे पास बहुत लंबे समय तक युद्ध और हथियार होंगे। दो हजार साल हो गए हैं जब मसीह ने अपने ''पर्वत पर उपदेश'' का प्रचार किया था और दुनिया ने उन अविनाशी उदात्त उपदेशों का केवल एक हिस्सा ही अपनाया है

जब तक हम मनुष्य के प्रति मनुष्य के आचरण के लिए मसीह के सभी सिद्धांतों को अपने हृदय में नहीं समा लेते, युद्ध, घृणा और हिंसा जारी रहेंगी।[8]

यह सोचना गलत था कि हथियार, शक्ति प्रदान करते हैं, गांधी के अनुसार, वास्तविक शक्ति भीतर से आत्म–बलिदान से आएगी ना कि शारीरिक बल के माध्यम से। उन्होंने बताया कि पुराने समय के ऋषि, जो स्वयं महान योद्धा थे, ने बल की पूरी तरह से व्यर्थता को महसूस किया और युद्ध से थकी हुई दुनिया को सिखाया कि इसका उद्धार हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसा से ही होगा।''

गांधी इस बात पर जोर दे रहे थे कि राष्ट्रों को खुद को आध्यात्मिक रूप से मजबूत करना चाहिए, क्योंकि ''आंतरिक आध्यात्मिक शक्तियां मजबूत होती हैं और एक अधिक निश्चित और स्थायी जीवन को प्रेरित करती हैं। गांधी के अनुसार दुनिया को शांति की गारंटी हथियार से नहीं दे सकते। बाहरी हथियार, बंदूकें, तोप और गैस केवल बूरे परिणाम दे सकती हैं।[9] उन्होंने कहा, "यह एक गलत दलील है कि कोई आत्मरक्षा के लिए खुद को हथियार दे रहा है, क्योंकि, वास्तव में, कारण हमेशा यह था कि आपने खुद को बीमार संगठित समुदायों और राष्ट्रों का शिकार करने के लिए संगठित किया।'' इस मामले का उपाय यही था कि वास्तविक निरस्त्रीकरण तभी हो सकता है जब दुनिया के राष्ट्र एक दूसरे का शोषण करना बंद कर दें।[10]

गांधी ने इस विचार को स्वीकार नहीं किया कि निरस्त्रीकरण के बाद स्विट्जरलैंड जैसे छोटे, तटस्थ और गैर–आक्रामक देशों को बड़ी शक्तियों पर निर्भर रहने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए। गांधी ने जोर देकर कहा कि स्विट्जरलैंड की तटस्थता और गैर–आक्रामकता के तथ्य ने वहां की सेना को पूरी तरह से बेमानी बना दिया। वास्तव में, स्विट्जरलैंड दुनिया को निरस्त्रीकरण का सबक देगा और यह स्थापित करेगा कि स्विस लोग, सेना के बिना रहने के लिए पर्याप्त बहादुर हैं। क्योंकि गांधी इस प्रस्ताव को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि स्विस सेना की उपस्थिति मात्र ने उस देश को विदेशी सेनाओं के कब्जे से बचा लिया था। स्विस सैन्य बलों की निवारक भूमिका के साथ–साथ सैन्य विकास के मूल्य, दोनों को खारिज करते हुए गांधी ने इसमें शामिल भ्रांतियों की ओर इशारा किया और कहा सेना रखने के प्रश्न के पीछे दोहरी अज्ञानता है।

गांधी ने कहा कि मैं इस तथ्य की निंदा करता हूँ कि, यदि आप सैनिक का पेशा छोड़ देते हैं, तो आप सेवा और बलिदान के अवसर से चूक जाएंगे। किसी को भी इस विचार से भागने की जरूरत नहीं है कि, क्योंकि आप सैन्य भर्ती से बचते हैं, इसलिए आप एक गंभीर और कुलीन प्रकार के अन्य कार्य के लिए नहीं हैं। जब मैंने श्रमिक के बारे में बात की, तो मैंने तुमसे कहा था कि श्रमिक को एक सैनिक के धीरज और बलिदान जैसे सभी महान गुणों को आत्मसात करना चाहिए। जब आप अपने आप को निशस्त्र कर लेते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपके पास आनंदमय समय होगा। ऐसा नहीं है कि जब आप सैनिक कार्य छोड़ देते हैं तो आप अपने घरों की सेवा के कर्तव्य से मुक्त हो जाते हैं, इसके विपरीत, आप अपनी महिलाओं और बच्चों के साथ अपने घरों की रक्षा में भाग ले रहे होंगे।

उन्होंने लिखाः फिर से मैं आपसे बिना अनुभव के बात नहीं कर रहा हूं। अपने छोटे घर को हम संचालित कर रहे हैं, तब हम अपनी महिलाओं और बच्चों को भी सिखा रहे हैं कि उस घर को कैसे सुरक्षित रखा जाए। सब कुछ सरल और आसान हो जाता है जिस क्षण आप दूसरों के जीवन को बचाने के लिए अपना जीवन देना सीखते हैं। और अंत में, यह वास्तव में भुला दिया जाता है कि एक व्यक्ति जो सुरक्षा आत्मबल से प्राप्त करता है यह वह सुरक्षा है जो आपको कोई भी हथियार नहीं देगा। गांधी ने यह कहा कि मुझे इस कथन की सच्चाई का सम्मानपूर्वक खंडन करना चाहिए कि स्विस सेना की उपस्थिति ने युद्ध से स्विट्जरलैंड को प्रभावित होने से रोका। हालाँकि बेल्जियम की अपनी सेना थी, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका था और अगर प्रतिद्वंद्वी सेनाएँ स्विट्जरलैंड से होकर गुजरना चाहती थीं, तो मेरा विश्वास करो, वे तुमसे भी लड़तीं।

परमाणु हथियारों के संबंध में, गांधी ने सोचा कि यह काफी व्यर्थ है उन्हें प्रतिबंधित करें। उन्हें प्रबल संदेह था कि जिन राष्ट्रों के पास वे हैं वे केवल उनके अधिकार से ही संतुष्ट रहेंगे और ''आतंक का संतुलन'' या अतिमारकता की क्षमता अपने आप में अहिंसा को प्रेरित और लागू करेगी उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब तक इन क्षेत्रों की सोच में हिंसा निहित है, हम

आपदा और आत्म–विनाश की ओर बढ़ते रहेंगे। वास्तव में गांधी ने कहा ''हिंसक व्यक्ति की आंखें बहुत अधिक मात्रा में विनाश और मृत्यु की संभावना से चुंधिया उठेंगी, जिसे वह अब बरबाद कर रहा है। अधिक से अधिक इन हथियारों की विनाशकारी क्षमता युद्ध के प्रकोप को अस्थायी रूप से स्थगित कर सकती है। ''जैसे एक आदमी मिचली की स्थिति में कम खाता है और मिचली के प्रभाव के खत्म होने के बाद दुगने उत्साह के साथ खाता है, ठीक उसी तरह से दुनिया परमाणु प्रभाव के बाद नए उत्साह के साथ हिंसा में लौट आएगी।[11] गांधी ने स्पष्ट रूप से ''परमाणु संतुलन'' को ''आतंक के संतुलन'' से ज्यादा कुछ नहीं माना।

गांधी के अनुसार, राष्ट्र अपनी साम्राज्यवादी संपत्ति की रक्षा के लिए एक दूसरे के डर से खुद को हथियारबंद कर रहे थे । अपने जीवन की शुरुआत में ही, गीता के दर्शन को प्रतिध्वनित करते हुए, गांधी ने हिंद स्वराज में जोर देकर कहा कि राष्ट्रों ने खुद को सशस्त्र किया क्योंकि वे इस डर से भरे हुए थे कि दूसरे उनकी संपत्ति को छीन सकते हैं। बल का प्रयोग तब किया जाता था जब लोग भय के वश में होते थे, और ''भय से जो प्राप्त होता है, वह केवल तब तक बना रहता है जब तक भय मौजूद रहता है।"[12] उसी समय, भय से घृणा उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रों के लिए शांति सुनिश्चित करने की दिशा में पहला कदम भय एवं अविश्वास को दूर करने के लिए उठाया जाना चाहिए। गांधी ने कहा कि उनकी प्रवृत्ति ने उन्हें बताया कि यदि आप किसी के लिए हिंसा का इरादा नहीं रखते हैं, तो कोई भी आपके खिलाफ इसका इस्तेमाल नहीं करेगाः ''यह केवल तभी होता है जब हम डरते हैं, हम अपने विरोधी के समान अशुद्ध शक्ति का उपयोग करते हैं इस तरह हम अशुद्ध तरीके सीखते हैं और कमजोर हो जाते हैं।

गांधी के वैश्विक शांति सम्बन्धी विचार

गांधी ने इसे संक्षेप में कहा, जब उन्होंने घोषणा कीः शांति कभी नहीं आएगी जब तक कि महान शक्तियां साहसपूर्वक खुद को निरस्त्र करने का फैसला नहीं करतीं। मेरा एक अंतर्निहित विश्वास है – एक ऐसा विश्वास जो आज और भी उज्ज्वल हो रहा है।

अहिंसा के अटूट अभ्यास के आधी सदी के अनुभव के बाद पहले से कहीं ज्यादा अहिंसा के प्रयोग के माध्यम से ही मानव जाति को बचाया जा सकता है।[13]

और यहां गांधी ने एक स्वतंत्र भारत को उत्प्रेरक की भूमिका में देखा। 1944 में जेल से रिहा होने के तुरंत बाद, न्यूज क्रॉनिकल के लिए एक साक्षात्कार में उन्होंने कहाः मैं हर समय शांति का प्रेमी हूं। आजादी के आश्वासन के बाद, मैं शायद कांग्रेस के सलाहकार के रूप में काम करना बंद कर दूंगा। और एक पूर्ण युद्ध प्रतिरोधी के रूप में मुझे एक तरफ खड़ा होना होगा, लेकिन मैं राष्ट्रीय सरकार या कांग्रेस के खिलाफ कोई प्रतिरोध नहीं पेश करूंगा यदि उन्होंने युद्ध के प्रयास का समर्थन करने का फैसला किया है,। मेरा सहयोग युद्ध के प्रयास में हस्तक्षेप करने से बचना होगा। मैं इस उम्मीद के साथ काम करूंगा कि भारत को शांति बनाए रखने के लिए मेरे प्रभाव को महसूस किया जाएगा और इस तरह जाति और रंग की विशिष्टता के बिना सभी के बीच वास्तविक शांति और भाईचारे की विश्व नीति को प्रभावित करेगा।[14]

गांधी कहते हैं, ''पूर्ण शांति तब मिलती है जब मन और हृदय शुद्ध होते हैं।[15] उन्होंने अपने पूरे जीवन को अपने देशवासियों के मन में अहिंसा, निर्भयता, जिम्मेदारी और कर्तव्य की भावना हेतु प्रेरित करने में लगा दिया। गांधी जन्मजात आशावादी थे शायद, लेकिन निश्चित रूप से अपने देश और देशवासियों में निहित असीम विश्वास के कारण गर्व के साथ, गांधी को भारत में एकतरफा निरस्त्रीकरण की उम्मीद थी। गांधी को विश्वास था कि ''मेरी अनुपस्थिति में भी शांति के लिए मेरा प्रभाव बना रहेगा, हालांकि मैं बहुत दूर हो सकता हूं, लेकिन मेरी आत्मा पीछे ही रहेगी।''[16]

अर्थशास्त्र, राजनीति, सामाजिक सुधार पर गांधीवादी विचार के केंद्रीय सिद्धांत ''नई विश्व व्यवस्था'' के लिए उनकी प्रासंगिकता साबित करते हैं। गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता, और उनकी सार्वभौमिक प्रयोज्यता ठीक इस तथ्य के कारण है कि उनके विचार औपनिवेशिक प्रभुत्व और शोषणकारी दृष्टिकोण, गला काट प्रतिस्पर्धा और कुछ अन्य भौतिक और सांसारिक मूल्यों पर आधारित नहीं हैं। इनके विपरीत वे नैतिक और आध्यात्मिक स्पर्श के साथ मजबूत मानवीय मूल्यों पर आधारित हैं। वे सभी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और अन्य समस्याओं को आध्यात्मिक स्पर्श देना चाहते थे जिसे वे समस्त समृद्धि और सुख का मूल कारण मानते थे। उनके विचार हमेशा सर्वोत्तम हितों और मानव की कई प्रकार की समस्याओं के वास्तविक समाधान के लिए थे।

कोई यह तर्क दे सकता है कि शांति पर गांधीवादी घोषणाओं में उन्हें वर्तमान दुनिया में लागू करने के लिए कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं। लेकिन गांधी खुद इस तरह की ''व्यावहारिक'' कठिनाई को नहीं मानते थे। उनके अनुसार ''यदि कोई व्यक्ति अहिंसा का अभ्यास कर सकता है, तो व्यक्तियों के पूरे समूह और पूरे राष्ट्र क्यों नहीं? उनका मानना था कि एक शुरुआत करनी चाहिए और शेष द्वारा उनका पालन करना चाहिए। विश्व शांति की गांधीवादी अवधारणा को इस रूप में देखा जाकर, उनके जीवन दर्शन के अभिन्न अंग के रूप में और अहिंसा के दर्शन के सामान्य ढांचे के भीतर उनके दृष्टिकोण की सराहना करने का प्रयास करना चाहिए। अच्छा साधन ही हमें हमेशा श्रेष्ठ शांति की ओर ले जा सकता है। अगर शांति हिंसा से स्थापित होती है तो इसका कोई फायदा नहीं होगा। आजकल हम अखबारों में अक्सर पढ़ते हैं कि पुलिस, कहीं–कहीं सेना, एक आंदोलनकारी जगह में मार्च करके शांति स्थापित करने जा रही है। लेकिन वह शांति निस्संदेह कब्रगाह की है। जब अहिंसक सफल होता है, तो वह दुश्मन का दिल जीत लेता है।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने ठीक ही घोषित किया कि गांधी ने दिखाया कि कैसे कोई व्यक्ति निष्ठा जीत सकता है, ''केवल राजनीतिक धोखाधड़ी और छल से नहीं, बल्कि जीवन के नैतिक रूप से उन्नत तरीके के जीवंत उदाहरण के माध्यम से। आइंस्टीन ने गांधी को अपने समय का सबसे प्रबुद्ध राजनेता माना, और उन्होंने भविष्यवाणी की कि दुनिया में शांति लाने की समस्या का समाधान गांधी के तरीकों को अपनाने से ही होगा।

तदनुसार, उन्होंने सत्याग्रह को एक अचूक और शक्तिशाली हथियार के रूप में बड़े पैमाने के अंतर–राज्यीय आक्रमण का मुकाबला करने के लिए वकालत की । सत्याग्रह सर्वत्र स्वीकार्य है। उनके अनुसार अहिंसा में युद्ध और शांति की शुरूआत नहीं होती है। शांति के बारे में गांधी के विचार बताते हैं कि विश्व शांति को प्रभावित करने के लिए उन्होंने जो समाधान पेश किया, वह अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की सीमाओं को पार कर गया है। अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति की मुख्य सीमा यह है कि यह शक्ति–व्यवस्था की मान्यता पर आधारित है। गांधीवादी तरीका अहिंसक और गैर–शोषक सामाजिक व्यवस्था के लिए खड़े होने का दावा करता है जो अकेले ही न्यायपूर्ण और स्थायी शांति सुनिश्चित कर सकता है। उनका मानना था कि किसी एक द्वारा शुरुआत होनी चाहिए और बाकी द्वारा उसका पालन करना चाहिए। विश्व शांति की गांधीवादी अवधारणा को उनके अहिंसा के दर्शन के सामान्य ढांचे के भीतर देखा जाना चाहिए। अहिंसा के उनके सिद्धांत का उचित मूल्यांकन उस सिद्धांत के तार्किक अनुप्रयोग को समझने में मदद करेगा।

सार्वभौमिक भाईचारे में गांधी के विश्वास, और अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण के उनके दृष्टिकोण ने उन्हें काफी तार्किक रूप से अहिंसा पर आधारित, विश्व संघ द्वारा एक समझौते से निर्मित,

एक विश्व सरकार के संदर्भ में सोचने और उसकी वकालत करने के लिए प्रेरित किया। "हाँ, मैं एक व्यावहारिक आदर्शवादी होने का दावा करता हूँ। मैं समझौते में इतना विश्वास करता हूं कि इसमें सिद्धांतों का बलिदान शामिल नहीं है। हो सकता है कि मुझे एक विश्व सरकार न मिले जो मुझे अभी चाहिए लेकिन अगर यह एक ऐसी सरकार है जो मेरे आदर्श को छू भी लेगी तो मैं इसे एक समझौते के रूप में स्वीकार करूंगा। इसलिए, हालांकि मैं एक विश्व संघ के प्रति आसक्त नहीं हूं, अगर यह अनिवार्य रूप से अहिंसक आधार पर बनाया गया है तो मैं इसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहूंगा।"[17]

एक स्वतंत्र प्रजातांत्रिक भारत, आक्रमण के विरुद्ध पारस्परिक रक्षा और आर्थिक सहयोग के लिए अन्य स्वतंत्र राष्ट्रों के साथ सहर्ष सहयोजित होगा। स्वतंत्रता और लोकतंत्र पर आधारित वास्तविक विश्व व्यवस्था, मानवता की प्रगति और उन्नति के लिए दुनिया के ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करने के लिए काम करेगी।[18]

इस तरह सार रूप में गांधी के लिए शांति, लोगों के बीच का रिश्ता है। शांति व्यक्तियों के बीच सामंजस्य से शुरू होती है। गांधीजी व्यक्तियों और समूहों के बीच इस तरह के संबंध स्थापित करने के लिए जीवित रहे और काम किया। आधुनिक संदर्भ में शांति के लिए उनका अद्वितीय योगदान है। गांधीजी की जीवन शैली और उनके द्वारा प्रतिपादित तकनीकों का अध्ययन और उपयोग किया जाना चाहिए ताकि दुनिया रहने के लिए एक सुरक्षित जगह बन सके। गांधीवादी विचार उनके जीवन काल के दौरान प्रासंगिक थे, वर्तमान में प्रासंगिक बने हुए हैं और आने वाले कई दशकों तक बने रहेंगे।

संदर्भ सूची

1. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, अंक 38, पृ.सं., 160–161
2. हरिजन, अंक 7, पृ. 305
3. पूर्वोक्त सं., अंक 11, पृ. 453
4. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, अंक 41, पृ. 30
5. हरिजन, अंक 11, पृ. 117
6. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, अंक 20, पृ. 406
7. हरिजन, अंक 6, पृ. 320
8. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, अंक 45, पृ. 319
9. पूर्वोक्त सं., अंक 48, पृ. 393
10. पूर्वोक्त सं., पृ.सं. 402.403
11. हरिजन, अंक 10, पृ 197
12. गांधी, एम. के, हिन्द स्वराज, अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, 1962, पृ. 16
13. हरिजन, अंक 6, पृ. 395
14. तेंदुलकर, डी.जी., महात्माः लाईफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी, नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, अंक 6, पूर्वोक्त सं., पृ. 256
15. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, अंक 19, पृ.10
16. हरिजन अंक 6, पृ. 404
17. प्यारेलाल, महात्मा गांधीः द लास्ट फेज, अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, 1956, अंक 1, पृ. 126
18. हरिजन, अंक 7, पृ 278